Table of Contents

1. [illegible]
2. [illegible]

दुष्यंत कुमार का परिचय

दुष्यंत कुमार का जन्म सन् 1933 में उत्तर प्रदेश के राजपुर नवादा गाँव में हुआ था। उनका साहित्यिक जीवन इलाहाबाद में प्रारंभ हुआ, जहाँ वे परिमल संस्था की गोष्ठियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। उन्होंने आकाशवाणी और मध्यप्रदेश के राजभाषा विभाग में भी कार्य किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में "सूर्य का स्वागत", "आवाज़ों के घेरे", "साये में धूप", "जलते हुए वन का वसंत" (काव्य), "एक कंठ विषपायी" (गीति-नाटक), "छोटे-छोटे सवाल", "आँगन में एक वृक्ष" और "दोहरी ज़िंदगी" (उपन्यास) शामिल हैं। दुष्यंत कुमार ने हिंदी गज़ल को लोकप्रिय और प्रतिष्ठित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका देहावसान सन् 1975 में हुआ।

मुख्य बिंदु

- जन्म : 1933, राजपुर नवादा, उत्तर प्रदेश
- साहित्यिक आरंभ : इलाहाबाद
- प्रमुख रचनाएँ : साये में धूप, एक कंठ विषपायी, छोटे-छोटे सवाल आदि
- हिंदी गज़ल को लोकप्रिय बनाने में योगदान
- मृत्यु : 1975

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

दुष्यंत कुमार की गज़ल संग्रह "साये में धूप" से प्रस्तुत गज़ल हिंदी गज़ल की उत्कृष्ट कृति है।

Prepzy

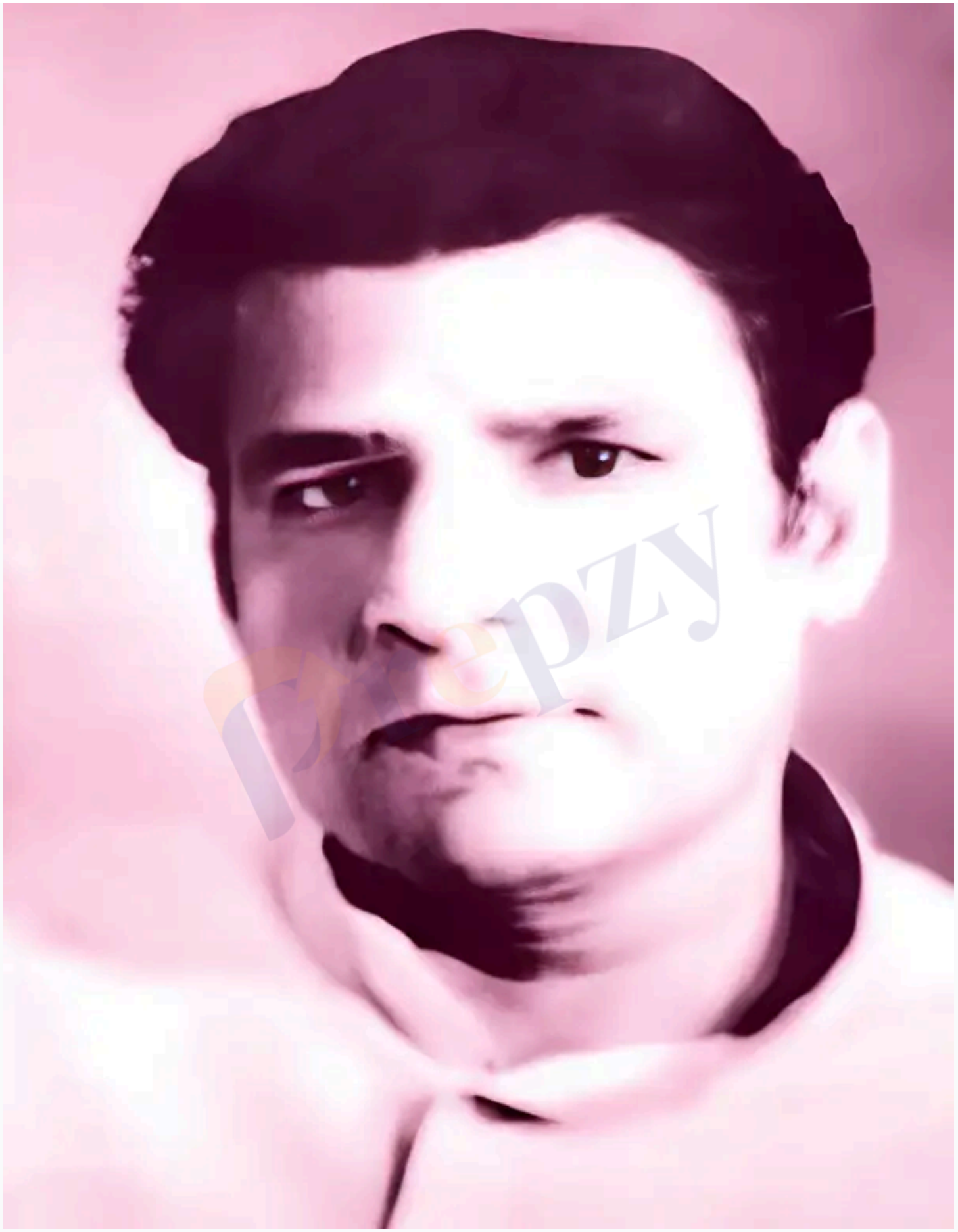

□□□□□□ □□□□□□

- □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□?

- दुष्यंत कुमार की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?
- दुष्यंत कुमार ने हिंदी ग़ज़ल को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर कुंजी

- दुष्यंत कुमार का साहित्यिक जीवन इलाहाबाद में शुरू हुआ, वे परिमल संस्था से जुड़े थे, आकाशवाणी और राजभाषा विभाग में कार्य किया।
- प्रमुख रचनाएँ: साये में धूप, एक कंठ विषपायी, छोटे-छोटे सवाल आदि।
- उन्होंने हिंदी ग़ज़ल को लोकप्रिय और प्रतिष्ठित बनाया, ग़ज़ल की विधा में नए प्रतिमान स्थापित किए।

शब्दावली

- परिमल : एक साहित्यिक संस्था
- ग़ज़ल : एक काव्य विधा जिसमें शेर स्वतंत्र होते हैं
- गीति-नाटक : गीतों पर आधारित नाटक

Prepzy

ग़ज़ल का विश्लेषण

ग़ज़ल एक ऐसी काव्य विधा है जिसमें प्रत्येक शेर स्वतंत्र और मुकम्मिल होता है। ग़ज़ल में तुक और मिज़ाज का निर्वाह आवश्यक होता है। दुष्यंत कुमार की यह ग़ज़ल "साये में धूप" संग्रह से ली गई है, जिसमें राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को खारिज करने तथा विकल्प तलाशने की भावना व्यक्त की गई है।

मुख्य बिंदु

- ग़ज़ल की विशेषताएँ: स्वतंत्र शेर, तुक और मिज़ाज का निर्वाह
- केंद्रीय भाव: सामाजिक-राजनीतिक आलोचना और विकल्प की खोज
- शेरों में तुकबंदी का नियम

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

"कहाँ तो तय था चरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।"

"यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।"

हल किए गए उदाहरण

पहले शेर में शहर की स्थिति का चित्रण है जहाँ उम्मीद के अनुसार हर घर में रोशनी नहीं है। दूसरे शेर में पेड़ों के साये में धूप लगने की व्यथा व्यक्त की गई है।

अभ्यास प्रश्न

- ग़ज़ल की विधा की विशेषताएँ क्या हैं?
- दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल में सामाजिक और राजनीतिक विषय कैसे प्रस्तुत हुए हैं?
- ग़ज़ल के शेरों में तुकबंदी का महत्व समझाइए।

Prepzy

उत्तर कुंजी

- ग़ज़ल में प्रत्येक शेर स्वतंत्र होता है, तुक और मिज़ाज का निर्वाह होता है।
- ग़ज़ल में समाज और राजनीति की विडंबनाओं को खारिज करते हुए विकल्प की तलाश की गई है।
- तुकबंदी से ग़ज़ल की एकता और संगीतात्मकता बनी रहती है।

शब्दावली

- मयस्सर : उपलब्ध
- दरख्त: पेड़
- मुतमइन: आश्वस्त
- बेकरार : बेचैन
- निज़ाम : शासन

- [redacted]: [redacted]
- [redacted]: [redacted]
- [redacted]: [redacted]